ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' १७४ म अंक १५ मार्च २०१५ (वर्ष ८ मास ८७ अंक १७४)

ऐ अंकमे अछि:-

लघु कथा-पसेनाक धरम-जगदीश प्रसाद मण्डल

लघु कथा-जमीला-डॉ.शिव कुमार प्रसाद

विन्देश्वर ठाकुर-पसाही/ धधकैत आगि/समर्पण/ मतलबी दुनियां/ मुहगरहा/ कविजी कोना भऽ गेल्हुं/ ककरो घर कन्नारोहट ककरो घरमे दलिभात [कथा/होली प्रसङ्ग]/ हम सब बिदेशमे खेलै छी होली/ ईश्वरकए कृपा अपरम्पार [आजुक सत्य घट्ना]/ फागुन पुर्णिमा (होली/ साक्षात्कार)

अशरफ राईन -(कविता)-बसन्त बहार/ देशक अवस्था/ तोहर जबाब नैए

अब्दुर रज्जाक-मुन्नाजीक विहनि कथा/ गजल

लघु कथा-पसेनाक धरम-जगदीश प्रसाद मण्डल

जहिना अंग्रेज-मासक जून काल्हि समाप्त भेल तहिना अपन जेठ मास सेहो ओरानीपर आबि गेल। पछिला साल जे दुर्गापूजामे हथिया नक्षत्रक बर्खा भेल, तहियासँ एको बून पानि मेघसँ नै खसल। ओना मघाइर बर्खा भेने जाड़ो किछु बेसियाइए जाइए, मुदा सेहो नहियेँ बेसियाएल। तइसँ जाड़क दुख तँ कनी कमबे कएल मुदा रब्बी-राइकेँ लाही चाटि गेल। हथियाक पछाति आठ माससँ अकास धरतीकेँ सरकारी राशन जकाँ पानि बन्न कऽ देलक। जइसँ रंग-रंगक विचार धरतीपर उठऽ लगल। कियो बजैत जे रौदी हएत, तँ कियो कहैत आगूसँ रौदी भेने थोड़े रौदी हएत आ जँ पाछूसँ मेघ फाटि बर्खे हुअए आ बाढ़ियो आबए तखन रौदी कहबै कि दाही। तहिना कियो ईहो कहैत जे कालीओ दास अखाढ़सँ बर्खा-मेघक आगमन मानै छथि तखन रौदी केना भेल। मुदा तेतबे थोड़े अछि, किम्हरो कमला पूजा तँ किम्हरो पानिक यज्ञ1 तँ किम्हरो रौदी भगबैले रामधुन-अष्टयाम-नवाह तँ किम्हरो मनुखदेवा गहवरमे पूजो अनधुन हुअ लगल। मुदा जे भेल, एते तँ भेबे कएल जे हथियाक बरिसल, माघक गुजरल फागुनक मोजर2 रौद आ पछिया हवामे तेना झड़कल जे आमे अलोपित भऽ गेल।

चारि बजे भोरेसँ शिवपूजन काका काजमे लगता तँए साढ़े तीनियेँ बजे नीन तोड़ि उठि प्रभात कर्मसँ निवृत होइत चाह बना पीब घड़ीपर नजरि देलनि तँ चारि बजैत देखलनि। पत्नीकेँ सोर ऐ दुआरे पाड़लनि जे ओ जगि कऽ तैयार भेल छथि कि नइ, मुदा सुगियो काकी पतिक कोठरीक खट-खुटक अवाज सुनि तैयार भऽ गेल छेली। तैयारो केना ने होइतथि, काल्हि साँझूए पहर तीनू गोरे3 एकठाम बैसि विचारि नेने छला जे पराते बीघो भरि खेतक चास लगाएब। गोरहा खेत छी ओतबो जँ सम्हरि कऽ उपैज जाइए तँ बुतातक साल-माल लगिए जाइए। तहूमे कि आब लोक पहिलुका जकाँ दुनू साँझ भात खाइए, एकसंझू भेने अदहे साल ने भेल। जेठ अखाढ़क सीमा परहक समए छी, माघ मास थोड़े छी जे लोक आठ बजेक पछाति काज दिस ताकत। अखनि तँ चारि बजे भोरेमे फरीच हुअ लगै छै। काजक अनुकूल समए तँ बनियेँ जाइ छै। तहूमे काजो नमहर अछिए। बीघा भरिक चास। एक दिस पहिने खेत पटत, तखन कदबा हएत तहिना दोसर दिस बीआ उखाड़ल जाएत, तखनि ने कदबाक पछाति रोपल

1 बर्खा होइबला यज्ञ

2 आमक मोजर

33 पिता- शिवपूजन, बेटा- सोनेलाल आ पत्नी सुगिया

जाएत। जेरगर जनकेँ जोड़ियबैओमे समए लगिते अछि। तेतबे किए! दमकलसँ पटौल जाएत ट्रेक्टरसँ जोतल जाएत, दुनू लोहे-लक्कड़ भेल, जँ कोनो पाट-पुर्जा गड़बड़ेतै तँ काजे रूकि जाएत। ओना सुगिया काकीकेँ बूझल रहनि जे अँगनाक काज पुतहुक हाथे अपने सम्हारऽ पड़त। तँए भोरेसँ जलखै-खेनाइक ओरियानक पाछू जारनि-काठीक व्योँत-बाँत मने-मन करिते रहथि, तेतबे नइ जँ कहीं पुरुख-पातर खेतेक काजमे ओझरा जेता तँ पानि-जलखै सेहो खेत पहुँचबऽ पड़त। सुगिया काकीकेँ शिवपूजन काका पुछलखिन-

"बौआ उठल? चारि बजि गेल। घटही गाड़ी जकाँ जँ शुरूएमे लेट भेल तँ टीशने-टीशन लेट होइते जाएत।"

भिनसुरका समए तँए सुगिया काकीकेँ पतिक बोल नीक लगलनि। नीको केना ने लगितनि कौआ जकाँ थोड़े पति बाजल छला, काग जकाँ कुचड़ल छला किने। मुदा काजक मोड़पर तेना सुगिया काकि पड़ि गेली जे किछु करैत किछु ने बनै छेलनि। मोड़ ई जे सोनेलाल खा-पी कऽ नबे बजे रातिमे पितासँ छिप कऽ आॅरकेस्ट्रा देखए चलि गेल छल जे पौने चारि बजे आपस आबि ओछाइनपर पड़ले छल कि उठबैक आदेश पतिक भेलनि। ओना सुगिया काकीक अपनो मन घिरनी जकाँ नचैत जे चारि बजेमे दमकल चलत तखन ने कदबा बेरमे कदबा हएत आ रोपै बेरमे खेत रोपाएत। कहुना-कहुना तँ सात-आठ घण्टा खेत पटैमे लगत। एक तँ गोलगर खेत तैपर जेठुआ जरल सेहो अछि। तहूमे कि फूलक छीच्चा छी, आ कि तीमन-तरकारीक जड़िपनियाँ छी, कदबाक पटौनी छी जइमे कहुना तँ भरि घुट्ठी पानि लगौल जाएत। तँए ओहो समएखिंचबे करत।

पत्नीक उत्तर नहि पाबि शिवपूजन काका कनी कड़ैक कऽ दोहरबैत बजला-

"की कहलौं, नइ सुनलिऐ?"

पतिक दहकैत अवाज सुनि सुगिया काकीक नजरि नचलनि। नचिते मनमे एलनि, एक दिस पति परिवारेक नीक-ले आफन तोड़ि रहलाअछि, दोसर दिस ई छौड़बा किए भरि राति जागि कऽ गमा लेलक..!

...आब ओ सूतत आकि जगि कऽ काज सम्हारत। अखनि जे ओकरा उठबऽ जेबै तँ ढोँढ़ साँप जकाँ फुफकार छोड़त...! जँ नइ उठेबै तँ अपने आरो बेसी दहकता!ऐ परिस्थितिसँ निबटब केना...? परिस्थितिसँ वैचारिक दौड़मे निपटियो सकै छी मुदा काजक जे जाल पसरि गेल, माने रोपनिहारकेँ कहि देने छिऐ, जे अपन समांगक गलतीसँ ओकर काज बधित हेतै! कहुना छी तँ पेट-बोनियाँ छी, भरि दिन थाल-पानिमे लेटाएत तखनि जा कऽ बाल-बच्चाक संग दुनू साँझ खाएत। अपनो परिवारमे जेते जोड़ि-बन्हन कऽ नेने छी, माने दमकल चलैक ओरियान, खेत जोतैक ओरियानक संग जलखै-चाहक ओरियान, ओहो तँ राइए-छीती भऽ जाएत...!

...मने-मन साहस बटोरि सुगिया काकी सोनेलालक कोठरीक मुँह लग जा ठाढ़ भेली। केवाड़ बन्न रहने बाहरेसँ बजली-

"बौआ, बौआ सोनेलाल?"

कनी पहिने सूतल सोनेलाक मोनमे ओहिना आॅर्केस्ट्राक सीनो सभ आ गीतोन्नाद नचिते रहै जइसँ नीन गहराएलो नहियेँ छेलै। मुदा माइक बोलकेँ अनसुन करैत सोनेलाल हूँ किछु बजबे ने कएल। जइसँ सुगिया काकी केबाड़ लग ठाढ़ छेली। ने आगू ससरि पति लग जाइक साहस होइ छेलनि आ ने बेटाकेँ जोरसँ दबारि उठबैक साहस होन्हि। एक तँ ओहुना भोरुका समए छी, सिताएलमे केतौ अगियाएल दौड़ै..।

...शिवपूजन काका पत्नीकेँ कहला पछाति, पत्नीएपर नजरि रोपि लेलनि। रोपि ई लेलनि जे काजक दौड़मे जँ काजक सूत्र मनसँ ससरि जाएत तखनि तँ काजो ओही लाथे ससरऽ लगत। जइसँ काज या तँ भरियाएत या

ओझराएत। पत्नीक क्रिया-कलाप देखि शिवपूजन कक्काक मन ठमैक गेेलनि। जैठाम ठमकलनि तहीठाम ठाढ़ सेहो भऽ गेलनि। तँए मिसियो भरि आगू-पाछू नइ डोललनि। अस्थिर भेल दरबज्जाक मुँह लग ठाढ़ भेल पत्नीपर आँखि गरौने रहलथि। मुदा नजरि घूमि कऽ काजक बीच सीमानपर आबि अँटैक गेलनि। अँटैक गेलनि ई जे कियो पसेना चुबा श्रम करैए आ कियो श्रमसँ छिटैक श्रमचोर बनि जाइए जे मेहनतक पसेनाक धरम नै बूझि पबैए, श्रमहीन बनि जाइए। एना किए एक्के मनक दुनू क्रिया छी। क्रिया तँ कर्मक अनुकूल चलैत अछि, कर्म चलैत अछि विचारानुकूल, आ विचार चलैत अछि धर्म-धारणक अनुकूल। माने जे जेहेनजिनगीकेँ धरम बूझि धारण करैए...।

...मुदा लगले मन नाचि गेलनि जे पसेनाक धरम की? जहिना एक-बट्टी, दू-बट्टी, तीन-बट्टी, चरि-बट्टी, पँच-बट्टी लग पहुँच अपन जीवन यात्राक पथ कियो देखए लगैए तखने ने देखैए जे पसेना तँ ओ शीतल बून छी जे कुवृत्तिकेँ धोइ जेते बढ़ैत जाइए से तेते धोइत-धुआइत अपन धरम धारण करैए। से कहाँ सोनेलालमे देखि पाबि रहल छी। धिया-पुता जकाँ जेना कोनो धनियेँढेकार ने छै, तहिना बूझि रहल अछि। जीबैले जीबैक उपाए सेहो तँ करए पड़ै छै। से कहाँ देखैमे आबि रहल अछि...! विचारैत-विचारैत शिवपूजन कक्काक मन अपन औझका काजमे ओझरा गेलनि। ओझरा ई गेलनि जे जे गर्भेनाश भऽ जाएत ओकरजिनगीक आशा केते कएल जाए सकैए..।

...फेर मन घुमलनि, जून मासक अन्त भऽ गेल, जइ बीआकेँ बीस-पचीस दिनक बीच रोपैक छल, ओ अदहा मइमे छीटने छेलौं, जेकरा आइ डेढ़ माससँ बेसी भऽ गेल,जे समए ओकर वृद्धिक छेलै, तइमे अदहा समए ओहिना चलि गेल। जाइक कारण भेल बर्खाक आशा-अाशी देखब।

जहिना शिवपूजन काका दरबज्जाक मुँहपर ठाढ़ भेल घड़ी दिस देख निराश भऽ रहल छथि, तहिना सुगिया काकी सूतल बेटाकेँ देखि उतरीत भऽ रहल छेली। मुदा दुनूक मनकप्रश्न अन-उतरीत छेलनि। उतरीत तँ केला पछाति भेलापर होइ छै। निराशमे आस भरैत शिवपूजन काका सुगिया काकीकेँ कहलखिन-

> “सोनेलाल सुतले अछि। चारि बजि गेल अछि, अखनि जँ ओकरा चरिया कऽ नइ उठाएब तँ अाे सुतले रहि जाएत।”

अपन मनक बात खोलैत सुगिया काकी बजली-

> “भरि राति अरकेस्ट्रा देखै छेलै, अखनि जँ उठेबो करबै तँ काजमे भकुआएले रहत।”

‘ऑरकेस्ट्रा’क नाओं सुनि शिवपूजन कक्काक मनमे उठलनि, अखन तँ खेती-बाड़ीक समए छी, कोनो उत्सवक समए तँ नहियेँ छी, अखुनका उत्सव तँ सभसँ पैघ खेतीक अछि, तहूमे काल्हि साँझूए पहर, काजक सभ व्योँत लगा नेने छेलौं, तखन किए एना केलक। बजला-

> “जखन अाैझका काजक सभ व्योँत बूझल छेलै, तखन किए देखऽ गेल। जँ गेबो कएल तँ घण्टा-दू घण्टा देखैत आ आबि कऽ सुति रहैत, जइसँ काजमे बिथुत नइ होइतै।”

मुदा सुगिया काकी चुपचाप पतिक बोल बेटा निविते सुनि रहल छेली। कोनो उत्तर नै छेलनि। छेलनि सिरिफ एतबे जे आँखिक ज्योति झूकल छेलनि।OO १६ मार्च २०१५, शब्द– १२५६

संक्षिप्त परिचए-

जनम : ५ जुलाई १९४७ ई., पिताक नाआंे :स्व. दल्लू मण्डल। माताक नाआंे :स्व. मकोबती देवी। पत्नी : श्रीमती रामसखी देवी। मातृक : मनसारा, भाया-घनश्यामपुर, जिला- दरभंगा। मूलगाम : बेरमा, भाया-तमुरिया, जिला-मधुबनी, (बिहार) पिन-८४७४१०

ई-पत्र : jpmandal.berma@gmail.com मो. ९९३१६५४७४२, ९५७०९३८६११

शिक्षा : एम.ए. द्वय (हिन्दी आ राजनीति शास्त्र), जीविकोपार्जन : कृषि सम्मान : "टैगाेर साहित्य पुरस्कार", "विदेह भाषासम्मान", "विदेह बाल साहित्य पुरस्कार" तथा "वैदेह सम्मान"सँ सम्मानित-पुरस्कृत।

प्रकाशित पोथी :

उपन्यास : (१) मौलाइल गाछक फूल, (२) उत्थान-पतन, (३) जिनगीक जीत, (४) जीवन-मरण, (५) जीवन संघर्ष, (६) नै धाड़ैए, (७) बड़की बहिन, (८) सधबा-विधवा (९)भादवक आठ अन्हार। नाटक : (१०) मिथिलाक बेटी, (११) कम्प्रोमाइज, (१२) झमेलिया बिआह, (१३) रत्नाकर डकैत, (१४) स्वयंवर। लघु कथा संग्रह : (१५) गामक जिनगी, (१६) अर्द्धांगिनी, (१७) सतभैंया पोखरि, (१८) उलबा चाउर, (१९) भकमोड़, (२०) पतझाड़, (२१) अप्पन-बीरान, (२२) बाल गोपाल, (२३) लजबिज्जी, (२४) गामक शकल-सूरत (२५) समरथाइक भूत, (२६) उकड़ू समय, (२७) अपन मन अपन धन।

विहनि कथा संग्रह : (२८) बजन्ता–बुझन्ता, (२९) तरेगन। एकांकी- (३०) सतमाए, (३१) कल्याणी, (३२) समझौता, (३३) तामक तमघैल (३४) बीरांगना संग्रह, पंचवटी। दीर्घ कथा संग्रह: (३५) शंभुदास, (३६) रटनी खढ़। कविता संग्रह : (३७) इंद्रधनुषी अकास, (३८) राति-दिन, (३९) सतबेध।गीत संग्रह : (४०) गीतांजलि, (४१) तीन जेठ एगारहम माघ, (४२)सरिता, (४३) सुखाएल पोखरिक जाइठ।

लघु कथा- जमीला-डॉ. शिव कुमार प्रसाद

१

अगियाएल मन कन घमले छेलै कि कनियाँ बिअनि नेने ठाढ़। सुमनजी तमतमा गेला। अबते जँ पत्नी बिअनि नेने ठाढ़ भेली कि बुझू जेहुनक चरखा शुरू। शुरू भाइए गेली-

> "अँए यौ! आर कियो नोकरी करै छै कि नहि। हमरा तँ लगैत अछि जेतेक दरमाहा अहाँक औपिसमे अबै छै सभटा अहींकेँ भेटि जाइत अछि...

...हे कियो काज नइ देत।"

सुमनजी की बजता। सभ दिन एके खिस्सा। ऑफिसमे सभ काज करै छै मुदा सुमनजीक कुशल,कर्मठ आ दृढ़ व्यक्तित्वक सोझा सबहक माथ झूकले रहै छै। चामक पूजासँ कामक पूजा पैघ होइ छै। ऐ बातक प्रत्यक्ष प्रमाण सुमनजी छथि। हुनक सहकर्मी संगे-संग हुनक पदाधिकारीओ सुमनजीकेँ सम्मान दइ छथिन। मुदा पत्नी लेल धैनसन।

सुमनजी बजला-

> "हे यै, एक गिलास जलो तँ नेने अबितौं! के काज देत। यै, जिनगी भरि तँ अहाँ आ अहाँक बाल-बच्चा लेल कमा-कमा कऽ देलौं से तँ एक गिलास पानियोँ नदारत अछि। फेर आनसँ हम की आशा करब।"

पत्नी मुँह फुलौने घरसँ निकलि बेटीपर फुफकार छोड़ऽ लगली कि तावत रस्तापर हो-हल्ला हुअ लगलै।

सुमनजी कपड़ो ने बदलने रहथि। ओ ओहिना दरबज्जा दिस विदा भऽ गेला। पत्नी सेहो पाछू-पाछू दरबज्जापर एलखिन। बीच सड़कपर सौंसे टोलक जनानी-पुरुखक करमान लागल छल। बीचमे कोनो जनानी

कानि-कानि कऽ नगरक लोककेँ बिखैनबिखैन गारिसँ असिरवाद दैत अल्ला निसाफ करतौ, अल्ला निसाफ करतौ...। कहैत बीच सड़कपर पड़ल छल।

सुमनजी चकित। ई अल्लावाली स्त्री केतएसँ टोलपर आबि गेल। कोनो चाेरनी ने तँ छी...।

...ई सोचिते छला कि पत्नी हाथ पकड़ि कहलखिन-

"चलू-चलू, कथीले गारि सुनब। ई छुतराही केकरो ने छोड़तै। जे जेहने करम करत ओकरा ओहने ने फल भेटतै।"

सुमनजीकेँ किछु भाँज नै लगलनि। परंच ई अबस्स बुझना गेलनि जे कोनो विशेष बात अबस्स छइ। ओ चुप-चाप पत्नी संग अँगना आबि गेला। अाँगन अबिते बेटी माएपर बाजलि-

"एतेकाल फुफकार कटै छेलेँ जे एक लोटा पानियोँ ने बाबूकेँ देल होइ छौह्रम पानि लऽ कऽ ठाढ़ छी आ दुनू गोरे तमाशा देखऽ चलि गेलेँ।"

सुमनजी बेटीक बात सुनि झमा कऽ खसला। कियो कम्महि। जल की पीता। बेटी दिस तकैत हतास् भेल अपन कोठरी दिस विदा भऽ गेला। मन तँ भेलनि जे बेटीक हाथसँ लोटा लऽ जुमा कऽ बाड़ीमे फेकि दी, मुदा फेर अपनाकेँ रोकला आ ओहिना बिछौनपर निढ़ाल भऽ पड़ि रहला।

बेटी टेबुलपर लोटा रखि चलि गेलनि। पत्नी पतिक मुँहक भाव देख नेने छेलखिन। भयसँ हुनका लग नहि एलखिन। हुनका बुझबामे कनिको भाँगठ नै रहलनि जँ अखन अगर लगमे जेबनि तँ निश्चित लोटा पानि समेत बाड़ीमे चलि जेतै।

सुमनजी बहुत सोझ आ शान्त बेकती। किनको किछु अधला नै करता। किनकोश्राद्ध आकि बिआहमे मदति करैले सदिखन तत्पर। हुनका लेल कियो आन नहि। बाल-बच्चा तँ हुनक प्राण। मुदा जखन क्रोध अबै छन्हि तँ कियो हुनका सामने जाइक साहस नइ कऽ सकैत अछि। एकटा माए आ बाबूएजी एहेन छथिन जिनका सोझा सुमनजीकेँ कोनो वश नइ चलै छन्हि। अपन जनमदाताक प्रति हुनका अगाध श्रद्धा छन्हि।

सुमनजीक भाव-धारा पुन:रस्ता दिस बहऽ लगल। की बात छिऐ...? ओ जनानी के...? किए सौंसे टोलक लोक जमा भऽ ओइ अवलाकेँ मरि रहल अछि...? ओ कोन कारणे 'अल्ला'केँ गवाही रखि सैंसे टोलसँ लड़ैले तैयार अछि...? जरूर कोनो असाधारण बात अछि। पुन: सभ बातसँ अलग सिरमापर माथ देने छतकेँ निहारऽ लगला।

पत्नी चुप-चाप तावत् टेबुलपर चाह आनि कऽ रखि देने छेलखिन। हुनकर मुँहक भाव सेहो बदलि गेल छेलनि। सुमनजीकेँ कहलखिन-

"कपड़ो ने बदललौं। चाह पीबलिअ, फेर कपड़ा बदलि लेब। अलगनीपर सभटा कपड़ा राखल अछि।"

पुन: अलगनी दिस तकलथि तँ ओइपर गमछा नइ छेलै। ओ पुन: घरसँ बाहर निकलि गमछा नेने घरमे एलखिन। तावत् सुमनजी बिछानसँ उठि चाह पीबै छला।

पत्नी गमछा बिछानपर रखि पान लगबऽ लगलखिन। सुमनजी बिछानसँ उतरि कपड़ा बदलैमे व्यस्त भऽ गेला। पत्नी पानो लगबै छेलखिन आ कनडेरीए आँखिए पतिपर तकितो रहथिन। पति चुप-चाप कपड़ा बदलैत रहला। पत्नी पतिकेँ किछु बतबैले उताहुल छली मुदा साहसे ने होइ छेलनि। ओ सोंचि-विचारि कऽ पतिक हाथमे पान दैत बजबाक असफलप्रयास केली मुदा पति केर भाव नै पाबि चुपचाप घरसँ निकलि गेली।

सुमनजी कपड़ा बदलि पुन: अपनेसँ पान लगा खा लेला आ चुपचाप आँगनसँ बाहर निकलि गेला। रस्तापर तमाशा समाप्त भऽ गेल छेल। ओ टहलैत खेत दिस निकलि गेला।❍❍

२

बाधमे दोसर गामक एकटा किसानसँ भेँट भऽ गेलनि। हिनका देखिते ओ प्रणाम करैत पुछलखिन-

"की यौ सुमनजी, अहाँ तँ खेत-पथार बिसरिये गेलौं। कहियो देखबो ने करै छी। आ लोक खेत दिस एबो किए करत। दू सालसँ एकटा अन्न केकरो खेतमे नै उपजि रहल अछि।"

सुमनजी ओइ किसानकेँ थाहैत लगमे जा बजला-

"कहू-कहू की हाल अछि खुशी भाइ। खेती-पथारीक की हाल अछि?"

खुशीलाल बाजल-

"की हाल रहत। कहुना अहुबेर चिचोरि-मिचोरि कऽ धान रोपि देलिऐ। आशा तँ नहियेँ अछि। तैयो रोपि देलिऐ...। हम सभ आब नोकरीओ तँ कऽ नइ सकै छी।"

पुन: फुसफुसा कऽ बाजल-

"सुमनजी, एकटा बात पूछी?"

खुशी भाइक फुसफुसाहटिपर सुमनजीक कान ठाढ़ भेलनि। सहटि कऽ खुशीलालक लग आबि पुछलखिन-

"की बात यौ!"

खुशीलाल ओहिना फुसफुसाइत बाजल-

"अहाँ टोलमे सुनलौं जे मुसहरवाक बेटा एकटा जोलाहिनसँ बिआह कऽ गामपर अनलक अछि।"

सुमनजीकेँ धक् दऽ मोन पड़लनि। ओ... जनु एकरे झगड़ा होइ छेलै..। खुशीलालकेँ कहलखिन-

"अँए यौ, अहाँकेँ ई बात बूझल अछि? हमरा तँ किछु ने बूझल अछि! अखनो रस्तापर हल्ला-गुल्ला होइ छेलै। वएह-वएह ओकरे झगड़ा होइत हेतैक।"

खुशीलाल बातकेँ आगू बढ़बऽ लागल। सुमनजीकेँ असली बात बुझबामे आबि गेलनि। अपन गामक निन्दाक बात सोचैत सुमनजी खुशीलालकेँ कहलनि-

"छोड़ू ऐ बात सभकेँ। केकरा की कहबै। और सुनाउ बाल-बच्चा केना अछि। की कऽ रहल अछि। यौ सुनलौं अहाँ-कनियाँकेँ मन खराप भऽ गेल छल। ठीक भेली किने।"

खुशीलाल अपन घरवालीक बात सुनिते बाजल-

"यौ सुमनजी, ओ पूर्वजन्मक पुनेक कारण बँचि गेली। नइ तँ मरबामे कोनो भाँगठ नहि रहि गेल छेलनि। काल्हि आऊ ने, देखियो लेबनि।"

सुमनजी 'हूँ-हूँ' करैत घर दिस घूमि गेला। गाम-घरक कोनो बात छपित रहि केना सकैत अछि...।

दोसर दिन सुमनजीकेँ छुट्टीए रहनि। घरसँ चाह पी कऽ एकटा मित्रक घरपर विदा भेला। रस्तेमे एकटा दरबज्जापर परचित-अपरचित सबहक अड्डा जमल छल। सुमनजी सेहो धरा गेला। एकटा नेताजी सेहोहुनका सबहक बीच विराजमान रहथिन। बैसला बाद पुन: चर्चा शुरू भेल।

मुसहरबा गामक एकटा किसान छल। विधाता ओकरापर दहिन छेलखिन। मात्र आठे-गोट बेटा देलखिन। आरो होइतै तैयो ओकरा खुशीए होइतै। जरजमीन तँ मुसकिलसँ दू बीगहा छै। दोसस्तेसर गिरहतक जमीनमे बटाइ करि कऽ गूजर-बसर करैत अ ाबि रहल अछि। एक जोड़ा बरद, दूटा भैंस, गाए, बकरी सभटा आमदनीए। जखनि समरथ छल, केहनो काजकेँ किछु ने बुझै छल। घरवाली सेहो विधाता दहिन भऽ कऽ देलखिन। हऽर-कोदारि छोड़ि एहेन कोनो काज नै अछि जे ओ नहि कऽ सकैए। तेहने काया, तेहने रंग आ तेहने रूप। जखन मुसहरबाकेँ दुरागमन भेल रहै ओही समए ओकर पत्नीकेँ देखबा लेल ओकरा अँगनाक टाटमे केतेक भूर भेल से गनब कठिन छल। मुसहरबाक माए सभ दिन दसटा गारि दऽ टाटक खरही सभकेँ ठीक कऽ दैत रहए, मुदा दोसर दिन फेर ओहिना-क-ओहिना।

गेल जवानी फेर ने लौटए। अठअठटा बेटाक जनम दइवाली जनाना आ फुरवक धीरे-धीरे परिवारक लगाम ढील होइत गेलै। एकटा, दोसर,तेसर पुतोहु तक तँ कहुना मुसहरबाक कनियाँ बेटा-पुतोहुकेँ बान्हि कऽ रखलक मुदा चारिम पुतोहुकेँ अबिते वेचारी हाफऽ लगली। जखन छोटकीक मुहसँ लुत्ती-उड़ए लगै, तँ मात्र मुसहरबे दुनू परानी नहि समुच्चा परिवारक लोक तेना ने दगैत छल जेसभटा मलहमो जरि जाइ छेलै।

एक दिनक बात छी। सुमनजी मुसहरबाक पड़ोसीक ओइठाम कोनो काजे गेल छला। बैसले छला कि मुसहरबाकेँ अँगनासँ वएह लुत्ती उड़ब शुरू भेल। लुत्तीक जवाब आगि-अँगोरासँ देल जाइत रहै। आब लुत्ती आ अँगोरामे अपन घरकेँ के कहए जे पास-पड़ोसक संगे संग एक-एकटा जाति-अजातिक संग कोनकोन सम्बन्ध ने उजागर होमए लगल। मुसहरबाक अँगनामे तिल रखैक जगह नहि। अचानक कुश्ती-कुट्टी शुरू भेल। तीन दियादिनी एक तरफ, छोटीक असगरे एक तरफ। अँगनामे ठाढ़ फुरव-पात्र लाजे ओतएसँ भागल। धरहरिया करैवाली सभ थाकि कऽ कात भऽ गेल। गइ सँइकटनी, गइ बपडाही, गइ सौतिनआर की की नहि...।

आइ मुसहरबाक परिवारक गाड़ीक कनैल, पालोक संग-संग चक्का, धूरी सभटा टुटि-फुटि कऽ नाश भऽ गेलै। मुसहरबा जीविते अछि। पत्नीओं जीविते छै। बेरा-बेरी बेटा-पुतोहु भीन होइत गेलै। आइ सभसँ बुरबक बेटा-पुतोहुक संग कहुना जिनगी काटि रहल अछि।

मुसहरबाकेँ बेटाक विषयमे सोच छेलै जे भगवान बेटा दइ छथिन तँ हम रोकैबला के। जीतै तँ बोइनकऽ कऽ खेतै। सभटा बेटा ठीके बा ेइन कऽ कऽ जीब रहल छै। कियो पंजाबतँ कियो दिल्ली आ कियो गामेमे। मुदा पुछैबला कियो ने।

एकटा बेटा परसाल गामेमे रहि एकटा भट्ठापर ईंटा बनबऽ गेल। ओतै एकटा जनानी जमीला सेहो रेजाक काम करैत छेलै। छौड़ा देखऽमे सुन्दर, लम्बा आ मजगूत देहक छेलै। धीरे-धीरे दुनूक बीच पेंच फँसि गेलै। ओकर नाओं रखि दियौ 'पंचा'। तँ पंचा आ जमीलाक बीच शारीरिक सम्बन्ध भेलाक कारणे ओकरा गर्भभऽ गेलै। जखन मामला उजागर हुअक स्थिति भेलै तँ दुनू परा कऽ बाहर भागि गेल। ओतै गर्भपात करबा कऽ दुनू फेर कामो-काज करए लगल।

पंचाकेँ दूटा बाल-बच्चा भऽ चुकल छेलै। जमीलाकेँ सेहो तीनटाबालबच्चा। जमीलाक घरबला एक-दू बर्ख पहिने छोड़ि कऽ भागि गेल छेलै। ओअपन माइक संगे रहैत छल। आब दुनू केती भट्ठापर कमाइत छल। दुनू अपन-अपन घरपर बाल-बच्चा लेल रूपैआ-पैसा सेहो पठबैत छल। ऐ क्रमे एक-डेढ़ बर्ख भऽ गेल। दुनूकेँ अपन-अपन बाल-बच्चाकेँ देखना बहुत दिन भऽ गेल छेलै।दोसर जमीला जेतेक पाइ कमाइ छल ओ ैंक वा पोस्ट-आ ॅफिससँ भेजैले पंचाकेँ दइ छेलै।

फोनपर जमीला जखन पाइ दऽ पुछै छेलै तँ बड़की बेटी कोनो बेर सही कोनो बेर कम बतबैत छेलै। धीरे धीरे जमीला बूझि गेल जे ई मुनसा हमर पाइ अपन घरपर पठा दइए,या रखि लइए। आब ओ पंचापर गाम जेबा

लेल जोर देमए लगल। पंचा कहुना-कहुना ओकरा पोल्हबै छल मुदा जनानीओं कम खेलल नहि छल। अंतमे दुनू गाम लेल विदा भेल। दुनूमे शर्त भेलै जे हम ने तोरा ओइठाम जेबो आ ने तों हमरा ऐठाम जेमे। दुनू गोटे अपन-अपन बाल-बच्चाक संगे दस दिन-मास दिन रहि फेर घूमि जाएब।

गाम एलापर बात बिगरि गेलै। जमीला गामपर आबि कऽ जे पाइकौड़ीक हिसाव केलक तँ पता चललै जे ओकर कमेलहा ५५-६० हजार रूपैआ पंचा बेइमानी कऽ लेलकै। ओ जनानी पहुँचल पंचा गामपर आ एमहर पंचा घरसँ फरार। टोलपर मेला लगि गेल। जमीला पहिने तँ पाइक बात कहलकै। फेर पंचाकेँ अपन घरवला घोषित कऽ देलकै। पंचाक अँगनामे ढुकि एकटा घरक ओसरापर जा कऽ बैसि रहल। पंचाक भौजाइ संगे-संग सौंसे गामक जनानी एक दिस आ पंचाक तथाकथित मुसलमानि पत्नी एक दिस। आब जमीला कहै

"जाबत मुनसा गामपर नहि औत ताबत हम ऐ ओसरापरसँ नहि उतरब।"

पंचाक घरवाली आ बाल-बच्चा संगे-संग आन भाए-भौजाइकेँ पहपटि भऽ गेल। की करी की नै। भरि दिन जमीला ओसारपर बैसल रहल आ अँगनामे रहनिहार सभटा धीरे-धीरे अँगनासँ बाहर भऽ गेल।

पंचाकेँ सेहो खबरि कएल गेल मुदा ओ किए औत। साँझ भेलापर जमीला जेसे बजैत अपन घरपर चलि आएल। गामक लोक सेहो निसाँस छोड़लक। रातिमे मुसहरबापर पंचायत बैसल।

"तोहर बेटा मियनि संग बिआह केलकौ तँए नै एलौ। बेटाकेँ बजा। कोनो बात अबस छै।"

मुसहरबा कहलकै-

"हौ पंच सभ। तों सभ हमरा किए कहै छह। पंचाकेँ भीन भेना सात बरख भऽ गेलै। आबओ हमरा बसमे अछि? ओही छौड़ाकेँ पुछहक। हम तँ नचार छी। कहुना जीबै छी। ओकर घरवाली छै। कहक पुछतै।"

पंचाक घरवाली एतेक लोकमे की बजतै। गुड़क मारि धोकरे जनै छै। ओकरा छाती अपने हहरै छै। तीनिटा धिया-पुता। तहूमे एकटा बेटी। सौतिन मुसलमानि। ओकरा आँखिक नोर नइ सुखा रहल छै। जे से बाल-बच्चाकेँ ताना मारै छै। नवकी माए एलौ रौ? की सभ अनलकौ? पंचैतीमे सभ मुसहरबाकेँ दोमैत रहल। ओ सभ बात सुनि कऽ चुप्पे रहल।

पंचाक घरवाली अपना माए-बापकेँ फोन करैलक। सभटा बात कहलकै। भाए सभ ओकर पट्ठा-पहलवान। बहिनकेँ ढाढ़स देलकै। भोरे दूटा भाए एलै। सभटा बात सुनलकै। गौआँकेँ फेर बैसार भेल। बैसार शुरूए भेल छेलै कि पंचाकेँ ओ नवकी कनियाँ फेर दरबज्जापर पहुँचगेलै। पंचाक सार संगे-संग सभटा नवतुरिया पंचैती छोड़ि जमीलाकेँ घेर लेलक। ओकरा एक आदमी पुछलकै-

"तों हिन्दू बनबीही तँ पंचा राखि लेतौ।"

ओ जनानी कहलकै-

"एनुका चान ओनए किए ने चलि जेतै मुदा हम हिनू नइ बनबै।"

एतबा बात निकलिते पंचाक सार चटाक् दऽ जमीलाकेँ मुँहपर थापड़ मारि देलकै। थापड़ लगिते जनानी जमीनपर बैसैत-बैसैत ओंघरा गेल। किछु आदमी पंचाक सारकेँ अलग केलक। ताबत् लोक देखलकै जे जनानी बेहोश छै। पंचाक घरवाली दौग कऽ पानि अनलक आ ओकरा मुँहपर हाथसँ छिच्चा देबए लगलै। थोड़ेकालमे

ओइ जनानीकेँ होश एलै। साड़ी खुलि गेल रहै ओकरा देहमे लटपटबैत गरि दैत ओ थाना जाइक बात कहैत विदा भऽ गेल।

थानाक नाओं सुनिते टोलबैया अपन-अपन अँगना दिस विदा भऽ गेल। मुसहरबा अँगनाक जर-जनानी सभटा अपन-अपन नहिरा दिस विदा भेल। पंचाक सार सेहो अपन बहिन आ भगिनीकेँ लऽ विदा भऽ गेल। एकटा बेटा जे बारह-तेरह बर्खक रहए ओकरा माल-जाल देखैले छोड़ि देलकै। मुसहरबा दुनू परानी टुकुर्टुकुर देखि रहल अछि। सुनि रहल अछि। ओइ मादे बलु सोचितो हएत। अँगनामे मन्न दूटा पोता छै। बेटो सभ किछ-मिछ खा कऽ बाध-बोन दिस टरि गेल।❍❍

३

कथा अनसोहाँत तँ ने लगैए? चलू कथा तँ बड़ ओझराएल अछि मुदा ओ ओझरीसँ निकालि कऽ हमहूँ निस्तार पाबए चाहै छी।

जमीला ठोकले थाना पहुँचल। संगमे माए आ एकटा छोटका बेटा सेहो रहै। सभटाखिस्सा कहैत ओ दरोगाजीकेँ पंचाक गाममे पर जेबाक जिद्द करऽ लगलै। जनानीबला बात। दरोगा ओइ जनानीकेँ टोलक चौकिदारकेँ बजबेलक। पंचाक गामक चौकीदारकेँ बजा पंचाक घरसँ बजबैले पठेलक। जखन जमीलाक बारेमे चौकिदारसँ दरोगा जिज्ञासा केलक तँ ओ साफ-साफ दरोगाजीकेँ बता देलकै जे ई जनानी ओही लाइक अछि।एकरा संगे जे भेलै से उचिते भेलै। ऐ जनानीक इहए धंधे छै।

दरोगाक सामने अपन चरित्रपर चौकीदार द्वारा देल गवाही ओकरा उत्तेजित कऽ देलकै। ओ दरोगाकेँ सोझहेमे गारि दैत चौकीदार दिस झपटल। मुदा ओकर माए आ बेटा कहुना ओकरा रोकलक। तावत पंचा गामक चौकीदार सेहो घूमल। पंचाकेँ भागब आ गामकखिस्सा कहैत ओ सेहो अपन विचार दरोगाजी लग रखलक। सभ बात सुनि दरोगाजी जमीलाकेँ दोसर दिन थानापर एबाक बात कहि डाॅँडिपैट कऽ कहुना घर पठेलक। दरोगाजीकेँ बुझैमे बहुत किछु आबि गेलनि। मुदा पंचोकेँ दोख तँ छइहे।

दोसर दिन जमीला भिनसरे थानापर पहुँचल। दरोगाजीकेँ पंचा ओइठाम चलऽ लेल जोर देमए लगलै। ऐ बीचमे पंचाक तरफसँ कियो दरोगाजीकेँ दुआ-सलाम कऽ कऽ सम्हारि गेल छल। दरोगाजी एमहर-ओमहर करैत जखन एक घण्टा बिता देलखिन तँ जनानी अचानक थानाक ओसरापर चढि ओइठाम राखल दूतीनटा प्लाष्टिकक कुर्सीकेँ उल्टैत दरोगेजीकेँ धमकी दैत कहलकै-

> "अगर अहाँ नइ जाएब तँ हम अखने डी.एस.पी.पुलिस लग जाएब। अहाँ हिन्दू छी तँए हिन्दूक पक्ष लइ छिऐ।"

एकटा सिपाही ठेंगा लऽ ओकरा दिस हूरकल मुदा दरोगाजी रोकि देलखिन। फेर किछु सोचैत सिपाही सभकेँ संग लगा जनानीकेँ गाड़ीमे बैठा पंचाक घरपर विदा भेला।

पंचा नइ छल। टोल-पड़ोसक धिया-पुता संग पुरुख-जनानीक भीड़ लागिगेल। दरोगाजी दू-चारि आदमीसँ पूछ-ताछ केलखिन। कियो जनानीक पक्षमे नइ ठाढ़ छेलै। सबहक सोझामे दरोगाजी अल्लावाली जनानीकेँ पुछलखिन-

> "तों की चाहै छेँ?"

ओ कहलकै-

> "पंचाकेँ हमरा अपना घरमे बौह बना कऽ राखऽ पड़तै।"

बिच्चेमे एक आदमी बाजल-

> "हँ रखतौ मुदा तोरा हिन्दू बनऽ पड़तौ, दोसर बात तों अपन बाल-बच्चाकेँ एतए नहि आनि सकै छेँ। तेसर बात जँ तोरा पंचा घरवाली बनेतौ तँ तोंजिनगीमे कहियो जोलहटोली नहि जा सकै छेँ। छौ मंजूर तँ दरोगाजीकेँ सामने कागज बना। हम सभ तोरा पंचा संग रखैले तैयारछियौ।"

सुमनजी ऐ कार्यक्रमक दर्शक छला ने सलाहकार। मुदा समाजमे ऐ तरहक घटनासँ अत्यन्त चिन्तित छला। दस आदमी। दस तरहक बात। मुदा ऐ तरहक घटना समाजक संस्कृतिक लेल स्वास्थ्यप्रद नहि। दरोगाजी जमीलाकेँ पुछलखिन-

"जब तों दुनू समाजकेँ बन्हनकेँ तोड़ि ऐ तरहक कर्म केलहिन तखन दुनू गाेरे सजाक भागी छेँ। तों धर्म नहि छोड़बिही, बालबच्चाकेँ नइ छोरबिही।जखन तों जोलहटोली जेबे करबिही तखन बिआह सम्बन्ध केना भऽ सकै छौ?"

समाजक लोककेँ दरोगाजी कहलखिन-

"अहींक समाजक पंचा छी। अहाँ ओकरा बजा समाधान करू। जावत् ओ नहि अबैत अछि तावत् एकर समाधान नहि होएत।"

फेर जमीला दिस घूमि कऽ कहलखिन-

"जे तोरा संग रहतौ ओ भागल छौ। तों ओकर पता कर। दुनू गाेरेक कारणे अगर समाज परेशान हेतौ तँ तोरा दुनूकेँ समाजो दण्डित करतौ। आ सरकारो समक्ष दण्डित हेमैं।"

जमीला बाजल-

"हमरा पंचासँ मतलब अछि। हम पंचाकेँ कारणे बौआइ छी। समाज हमरा किए मारत? समाज निर्णए करऽ पड़तौ।"

दरोगाजी दू दिनक समए दऽ चलि गेला। गेला बाद जमीलाकेँ कहल गेल, जे काल्हि भिनसरमे तूँ आ। अपना संग जेकरा आनबाक हउ सेहो नेने आ। पंचैती हेतौ। पंचा जेतए नुकाएल छल ओकरा समाद दऽ बजाएल गेल।

आइ दुनू समाजक बीच पंचा आ जमीला दुनू बैसल अछि। पंचा समाजक सामने जमीलाक कथनकेँ स्वीकार केलक। समाजक एकटा आदमी ओकरा दूचािर थापड़ मारबो केलकनि। मुदा आर लोक बीच-बँचाउ केलक। बादमे पंचाकेँ पूछल गेल जे ओ की चाहैए।पंचा चुप। जमीला चुप। अन्तमे पंच निर्णए देलक-

"दुनू जे काज केलेँ से अनुचित अछि। तीन-तीनटा बाल-बच्चा रहैत तोरा सबहक कर्म नींदनीय छौ। तों दुनू धर्म समाज, जाति आ परिवारक विध्वंसक छेँ। पति-पत्नीक रूपमे तोरा दुनूकेँ रहब सम्भव नहि।"

पंचाक पत्नी आ बाल-बच्चा जमीला आ ओकर तीनटा बालबच्चाकेँ स्वीकार नहि कऽ सकैत अछि। धर्म आ जातिपर सेहो एकर प्रभाव पड़तै। तँए अगर पंचा मुसलमान भऽ जमीलाक संग चलि गेल तँ ओकर बाल-बच्चाक भार के लेतै? तोरा दुनूक ऐ सम्बन्धसँ धार्मिक विवाद भऽ सकैत अछि। मुदा हम सभ से नै होमए देलिऐक।

समाजक निर्णए भेलै जे तों दुनू काल्हि भोर होइसँ पहिने गाम छोड़ि दे। जमीला पंचाक घर भविसमे कहियो ने आबि सकैत अछि। पंचा कहियो जमीलाक घर नइ जा सकैत अछि। गामक बाहर तों भलहिं पति-पत्नी बनि रह मुदा गाममे दुनू संग-संग पएर नहि राखि सकै छेँ। अगर समाजक बात नहि मानेंमतँ आगू तों सभ अपन बाल-बच्चाक संग अपनकेँ जातिसँ बहिस्कृत बूझ।

कागतपर हिन्दू आ मुसलमान दुनू तरफसँ पाँच-पाँच आदमी चारि फर्द कागत बनेलक। चारू फर्दपर पाँचो पंचक संग जमीला आ पंचासँ निशानक संग संग सही कएल गेल। दूटा फर्दपंचा आ जमीलाकेँ देल गेलै। एकटा पंचाक गामक पंच रखलक। पंचा आ जमीला चुपचाप कागत लऽ ओतएसँ विदा भऽ गेल।

आइ धरि पंचा गाम नहि आएल। ओकर बाल-बच्चाक संग पत्नी पंचाकेँ भेजल पाइ अथवा अपने बुतापर जीब रहल अछि।

जमीला आइ धरि गाम नहि घूमल। जमीलाक बाल-बच्चा सेहो जमीला अथवा अपन नाना-नानीक संग जीब रहल अछि।❍❍

विन्देश्वर ठाकुर

पसाही

कािल्हए साझुक बात थिक
उठलै एकटा लुती
खसलै फगुनियाके घर प'
घर छलै फुस के तें
पजैर गेलै आगि आ
सुनगि गेलै धिरे - धिरे ।

आब त धिधरा बढिए रहल छैक
चिनगी एम्हर ओम्हर उडिए रहल छै
धिरे - धिरे पछिया सेहो
जोड मारS लगलैय
बाउ हौ ! बाउ !
आब कोना सम्हरतै आगि ?
आगि त धिरे धिरे ओकरा टाट आ
घरके भितर सेहो लपैक लेलकै
मुदा तैयो
चहूँबा फगुनियाके धाह लगैछै कि नै?
धोबिनियासंगे सुतल छै न्ङ्गटे बिछानपर
ने जान के चिन्ता छै/ने इज्जतके ठेकान
हे, देखियौ न -
ओकरे देखि देखी आब त
ओकर बेटियो आ पुतौहो
ओकरे नक्कल कर लगलैय
बेटी खलीफा जरे आ
पुतौह दौरपिबा जरे
रसलीला नचाब' लगलैय ।

गौवासब मुकदर्शक बनल छै
हौ भाइ, हौ !
हे ओकरा चेत' न
ने त ओकरे साथ साथ पुरा गाउमे
पसैर जेतो आगि आ
लागि जेतो पसाही सबठाँ
तखन -
सुडाह भS जेतै पुरा गाम

माटिमे मिलि जेतै एतुका शानस्वभिमान
त हे - लैत रैहा बबाजीके घन्टा आ
डोलबैत रैहहा भोर - साझ उठिक ।

एकटा बतहबी बुढिया
चिच्च्यारहल छै सडकपर
कखनो पुर्बारी टोल त कखनो
पछिमबारी टोल बस इहे फकरासंग आ
बेर बेर एक्कहिटा रट लगौने छै
हौ बाउसब हौ !
हौ सबकिओ दौग न हौ
एहि पसाहीके मिटाब'न हौ
एहि धधराके मिझाब न हौ
ने त लपैक लेतो पुरा गाम आ
सुडाह भ जेतो सबकिछु ....
सबकिछु ......

विन्देशवर ठाकुर
धनुषा /नेपाल
हाल : कतार

विन्देश्वर ठाकुर

धधकैत आगि

बर्षो भेल एहि नेतागणके
तेल लगा क' सोटिरहल छी
अपनहि हाथे अपन माथ
काडा पत्थर प' ठोकिरहल छी

एकजुट भS भोट दियैलौ
सडक स संसद पहुचैलौ
सुखल चुरा माउसक लोभे
नै जानि आरो कि कि केलौ ?
बस ओकरे परिणाम थियैक जे

एखनोधरि दुख भोगिरहल छी
अपनेहि हाथे अपन माथ
काडा पत्थर प' ठोकिरहल छी

चेतु चेतु आबो चेतु
गुमसुम नंगटे नाच ने देखु
करैय हिजरा ता ता थैया
डेन पकैर क' बहरा फेकु
भेटत कि जे एना अनेरे
देशके युद्धमे झोकिरहल छि ?
अपनहि हाथे अपन माथ
काडा पत्थर प' ठोकिरहल छी

दरेग नाम के चिज ने जकरा
करब कि ओकरा विश्वास ?
ढोंगी,फिरंगी,कुलंगार सँग
बुझु जे सोनित जोखिरहल छी
अपनहि हाथे अपन माथ
काडा पत्थर प' ठोकिरहल छी

देशक बिचित्र हाल देखैछी
शोषण - दमन खुलेआम देखैछी
युवा शक्ति देशक कर्णाधार होइय
मुदा,ओकरो भविश्य अन्धकार देखैछी
बुझु जे आब अपने स अपन
आँखिमे औंरी भोकिरहल छी
अपनहि हाथे अपन माथ
काडा पत्थर प' ठोकिरहल छी

कोना होएत देशक कल्याण ?
कोना रहत निज पुर्खानाम ?
कोना बचाएब देशक गरिमा ?
कोना राखब अपन पहिचान ?
अपनहि घरमे दूध पिया जँ
बिषधर अजगर पोसिरहल छी
अपनहि हाथे अपन माथ
काडा पत्थर प' ठोकिरहल छी

विन्देश्वर ठाकुर

(नारी दिवसपर)

समर्पण

हम चिपरी नै जे पाथि सकब
ने करसीसन घुरमे कोचि सकब
स्वाभिमानी छी स्वाबलम्बी छी
तें, ने आँखिमे औरी भोकि सकब

मानैत छी जे हम नारी छी
किछु ज्ञानी छी अज्ञानी छी
मुदा हमहु समाजक हिस्सा छी
कल्याणी छी हितकारी छी

भैयासन हम बनि देखाएब
अटो - रिक्सा ट्रेन चलाएब
एकबेर बस अवसर भेटय
अन्तरिक्षमे सेहो बिमान उडाएब

कसर ने छोडब बाँकि कनियो
हर पल देशक उत्थान करब
मरितो दम तक देशभक्ती आ
राष्ट्र जागरण अभियान करब

शोषण -दमन ,समाजिक हिंसा
जरि स हम उपटाएब यौ
नारी जातीके गौरब गाथा
विश्वमे हम फैलाएब यौ

हे अम्बे ! जगदम्बे मैया
एकहिटा बस बरदान दिअ
राष्ट्रभक्ती बहय सोनितमे
एहन समर्पण भाव दिअ

विन्देश्वर ठाकुर
धनुषा / नेपाल
हाल : कतार

विन्देश्वर ठाकुर

मतलबी दुनियाँ

राइत अम्बसिया
सुझय ने हाथ हाथ एकोमिसिया
मुदा तैयो,
ओकरे इन्तजारमे
बित गेल पहरतीया
ओ नहिए आएल,
नहिए आएल
नहिए आएल
हम भरि राति
कटैत रहलौ अहुरिया ।

एकटा समय छल,
जहिया हमहु छलौ
नम्हर गबैया
कमाइ छलौ
मुठाके मुठा रुपैया
सब कहैत छल - बाबु आ भैया
तहिया,
भुखनी सेहो
मरैत छल हमरे प आ
कहैत छल सैया यै सैया ।

मुदा,दूर्भाग्य देखु -
भेलछी एखन लाचार
सुतल छी लम्पसार
लगैय जेना -
चारुदिस अछि
अन्धकारे अन्धकार ।

ई वेह संसार छी
जहिठाँ,
आपतमे छोडैय सीताके संग राम
द्रोपदीक चिरहरणमे
ने होइय कियो सहाय
सोचु -
जखन सतयुगमे भेल एहन काम

तखन,
कलयुगमे के करत अहाँक निदान ?
इहे सोचि सोचि,
नै होइत अछि कनियो दुख
चाहे भुखनी अएली नै अएलीह
मुदा,
हम त अपना स्वास्थक ख्याल रखबे करब
दु दिनक जिनगी जियबे करब
चाहे दुख मे हो या सुखमे हो!

जिन्दावाद !

** विन्देश्वर ठाकुर **

विन्देश्वर ठाकुर

** मुहगरहा **

शशीकान्त 'शशी' गामक एकटा जानल मानल आ कहबैका नेता । ओना त बेसी पढललिखल त नहिए रहे मुदा तैयो अपन थोथी पावर तेज भेलाक कारणे सबठाँ अपन धाक जमौने रहय । सब जगह,सबकार्यक्रममे ओकर चर्चा-परिचर्चा होइथ । चाहे ओ कोनो सामजिक कार्यकरम हुवे अथवा कोनो पार्टीके प्रचार प्रसार । चाहे नारीसबके कोनो आयोजना अथवा फुसद्वारा आयोजित कोनो प्रोग्राम । अपन चापलुसी आ विभ्रमितयुक्त भाषण स सबपर अपन अमित छाप छोडिए दैथि । उमर सेहो ४० सँ उपरे । तें सब उन्का सम्मान सेहो दिए । आइयो किछु एहने बात भेल । नारी दिवसके अवसरमे एकटा अन्तरकृया कार्यक्रमके आयोजना भेल छैक । जाहिमे उनका आमन्त्रणा भेटल छैक । देश बिकासमे महिलाके भूमिका,समाजमे नारीके स्थान,नारीप्रति समाज तथा देशके कर्तब्य आदि-आदि बिषयसब उपर चर्चा -परिचर्चा हेतै आजुक कार्यक्रममे । उनका एहि कार्यक्रमके प्रमुख अतिथी बनाओल गेल छैक । तेंशशी कक्का औझका कार्यक्रमके लेल रातिमे सब तयारी कयलक । कल्हि भाषणमे कि कि कहबाक अछि ? महिलाक कोन -कोन हक अधिकारके उपर बहस करबाक अछि ? महिलाके स्थान अपन समाजमे बिशिस्ट अछि आ सदिखनि रहत । अपन देशमे महिलाके देवीकेरुपमे पूजाल जाइत छैक । सब क्षेत्रमे समानता आ स्वतन्त्रताके हक प्रदान भेटल छैक । आदि- इत्यादी । शशी कक्का ठीक ओहिना कयलक । कौल्हका कार्यक्रममे भाषण देबाक लेल पुरा माइन्ड मेक अप कयलक । खाना खाS सुतल । बिहान भेने अपन दैनिक काम स निर्बित भS नहाS धो' खाना-साना खाS १०बजे चलल कार्यक्रमके ओर । पूर्व नियोजित कार्यक्रम ठीक समयपर शुरु भेल । सबगोटे अपना अपना स्थान स ओहिठाँ पहुचल । शशी कक्का सेहो पहुचल । कार्यक्रम शुरु भेल । सबगोटे समाज आ देशमे महिलाके आवश्यकता,महिला हक -अधिकार,बर्तमान समाजमे महिलाक अवस्था,महिलाके लेल समानता आस्वतन्त्रता । इहे बिषयसबपर अपन अपन बिचार सबप्रकट कयल गेल । कार्यक्रम बहुत सभ्य आ भव्य तरिका स सम्पन्न भेल । शशी कक्का सेहो एहि अपन बिचार बहुत सम्यताके साथ रखलक । हुनक भाषण त बुझु जे सबके हिर्दयके छु लेलकै । महिला श्रद्धा आ महिला आवश्यकताके तेहन

जिबन्त रुपमे ने चर्चा केलकै से सबगोटे ओकर गप्प सुनिक मन्त्रमुग्ध भऽ गेलैक । महिला समाजक हिस्सा छै । बेटी साक्षात लक्ष्मी आ सरस्वतीके रुप होइछै । नारी शक्ति बिना देश आ समाजके बिकास असम्भव छैक । हर क्षेत्रमे महिलाके समान अवसर भेटबाक चाही । बेटा बेटीमे कोनो भेदभाव नै होएबाक चाही । नारीके जाधरि समाजमे इज्जत,सम्मान नहि भेटत ? जाधरि महिला सशक्तिकरण नहि होएत ताधरि समाज आ देश बिकास के परिकल्पना करब असम्भव छैक । एहने एहने बात सबस शशी कक्का कार्यक्रममे वाह वाही लुटने रहथिन् । कार्यकर्म समाप्त भेलै । चारुदिस अखबारमे,टी भि मे,रेडियोमे सब मिडियामे आजुक कार्यक्रमके समाचार बनलै । शशी कक्का आ आरो आरो ब्यक्तिसभक पोस्टर सब सेहो सबठाँ छापल गेलै । बुझुजे अते धुमधाम सँ 'महिला दिवस'मनाओल गेलै आ एक सालके लेल अपन कर्तब्य पुरा कयल गेलै ।

जखन कि सत्य गप्प ई छैक जे शशी कक्का अपने घरमे महिलाके समान हक नहि दऽ
सकल छैक । बेटाके काठमाण्डौमे आइ एस सी पढऽ
रहल छैक मुदा बेटीके एस एल सी के बाद पढाई बन्द करा घरेमे बैसौने छै । अपने पुतौह कहने रहथि जे हम पुलिसके जागिर करब त चहैट क बाजल रहथिन जे हँ बेटी पुतौह कही पुलिसके जागिर कयलक ? ओ त घरक इज्ज्त होइछै आ ओकरासबके एहन क्षेत्रमे जाएब उचित नहि । एखनोधरि शशी कक्काके परिवार माने नबटोलीबाली काकी जरेजरे कोनो सामाजिक आ संस्कृतिक कार्यक्रममे जाएत से सेहन्ता लगले रहि गेलनि बुढीयाके । मुदा ई घरभितरके महिला हिंसा आ दुवाभाग बाहरके लोगसब कियान गेलै? ओतबे कहाँ ? एमरीए साल दशैंमे सोमनाके नाति मरि गेलै निमोनिया स आ सबगोटेमिलिक गारि -बेज्जति कयलकै झटियाहीबाली काकी के । एह हे भगवान ! एहन दूर्व्यबहार केने रहै से नहि पुछु । झोटा काटि देलकै आ गुँह घोरिक पिएलकै । गें दैया छि ! छि ! सब ओकरा दुर छिया ! दुर छिया ! कयने रहै । जहिमे सब स बेसी त शशीए कक्का के हाथ रहै । ऊ कहै से आइए स नहि ई मौगीया जमने स डाइनसिखने छै बलु । एकर साउसो डाइन रहै आ इहो एहन नमरके डकिनिया छै । मार एकरा गाम स निकाला कर । हे हेतै से देखल जैतै । ओतबे कहाँ सेपछेर्बाबाली के बेटी बुधोके जे मोहना छौडा बलत्कार कयने रहै ओकरो त इहे माने शाशीए ने२० हजार घुस ल'क झापि तोपि देलकै ने । तें त कहैत छी जे पहिने अपने भल तहने जगतर भल । अपने नै भल त जगतर कत स भल? कथनी किछो आ करनी किछो । एनामे परिवार आ समाज त चलबेनै करत । तहन देश कोना चलाएब ?यौ जी झुठि फुसिके भाषण पर ई समाज कते दिन टिकत ? आ अँही कते दिन टिकाल रहब ?समाज परिवर्तनके लेल ई मनगढण्ते बाट नहि सच्चा,इमन्दार आ कर्मठ नेता चाही । महिला दिवसपर अपन चापली चापलुसी भाषण नै एकरा जीवनमे सब दिन उतारय बला जनमानस चही । तखने समाजक आ देशक बिकास सम्भव अछि । ने त 'नारी दिवस' के दिन अपन छनेमे छनक सनके भाषण देब बला मुदा भरि सालधरि महिलाके शोसण दमन कर बला शशी कक्का सनके मुहगरहा नेता आ समाजसेवी अपना समाजमे कते छै कते ....

विन्देश्वर ठाकुर
धनुषा नेपाल
हाल :कतार

विन्देश्वर ठाकुर

' कविजी' कोना भऽ गेलहुँ ?? [रोचक परिचर्चा]

आजुके दिन बड सोहाबन ,मनभावन रहल । चारुदिस बुझु जे सप्तरङ्गी आकाश लागल हो आ ताहिबीच हमसब स्नेहक रङ्गमे एना रङ्गेलौ कि कतबो रगडने आब१ सालधरि छुटत नहि । एहन खुशीके महौलमे हमहु अपन एकटा खुशी बाटिली !

बात इ जे मनुष जनम लैयत ओ करा अपन समाजिक संस्कारके हिसाबे छठियारक दिन एकटा नाम राखल जाइय । जाहि नामसँ ओ मानल जा अल जाइत छैक ।आ ओहे नाम स ओकरा जीनभरि बजाओल जाइत छैक ।तहिना हमरो नाम राखल गेल'विन्देश्वर ठाकुर' । ओना सर्व बिदिते अछि जे जखने लोग साहित्यमे अबैत अछि त अपन नाम के पाछु किछ ने किछु 'टाइटल'जरुरे रखैय । मुदा हम एखन्धरि अहुना नै केने छलौ । कारण अनेक हेतै सायद । भऽसकैय हम ओहि योग्य नहि बुझने होएब अपने आपके । अथबा"अपनेमने निक लगैछी आ जगतरके लोक त थुके दैय"सेह लोकपाबदस डर लगैतहुवे हमरा । खायर कारण जे किछुहुवे मुदा हम एखन्धरि विन्देश्वर ठाकुर के विन्देश्वर ठाकुर लिखैत छी । मुदा आइ किछु स्पेशल भेल । आब एकर बृतान्त सुनी ।

बिगत किछु दिनस 'सुच्चा मैथिल' नामक एक्टा ग्रुप छै । जाहिके मूल उद्देश्य निम्न बर्गके उत्थान आ समान हक अधिकार सुनिश्चित करब थिक । एहि पेजपर हमरा जोडल गेल । हमप्रसन्न्ता स ओहिमे जुडलौ ,जुडल छी आ जुडल रहब । जखन एहिस निस्तर जुडलौ आ अपन रचना सब पठबैत गेलौ तहिए स हमरा ओहि पेजपर 'कविजी' कहिऽसम्बोधन होब' लागल । एकर शुरुवात केलनि प्रकाश कामतिजी आ बैध्य ओ पि महतो जी । जानकारीए होएत जेप्रकाश जी मुम्बई मे रहै छथि आ मैथिली मिथिला प्रति अति सकृय युवा छथि । तहिना बैद्य जी मिथिला राज्य निर्माण सेना के क्षेत्रीय अध्यक्ष छथि आ साथमे आयुर्बेदके बहुत अनुभवी बैद्य सेहो छथि । अपनेसबके जानकारी कराबी जे सुच्चा मैथिलके लेल " हम लडिक लेब अधिकार " बोलके गीत सेहो हमरेद्वार लिखल अछि जाहि लेल हमरा काफि प्रसंशा भेटल । ई क्रम निरन्तर चलैत रहल । हम अपन रचनासब निस्तर पठबैत रहलौ आ ओसब हमरा उत्साहबर्धन करैत रहल ।

आब त एहन भऽगेल अछि जे बुझु सबगोटे विन्देश्वर ठाकुर स बेसी 'कविजी' कहऽलागल अछि । जेना अमलेश भाइ जे दर भङ्गेके छथि मुदा एखन दिल्ली रहैछथि आ एहो मैथिली मिथिला लेल एकटा वीर सपूत छथि । तहिना रामपृत जी जे नेपालक छथि आ एखन साउदी अरबमे रहैछथि । तहिना असरफ जी,अब्दुल राजाक जी,बेचन महतो जी, ई सबगोटे नेपालेके छथि मुदा रोजगारीकशिलशीलामे एखन कतारमे रहि रहल छथि आ ओतै स साहित्य सिर्जना करैत छथि । एहने आरो आरो मित्रसब छथि जे बस हमरा विन्देश्वर स बेसी कविजी कहि चिन्हैछथि ।

उपनाम देब लेब त खराब बात नै मुदा ओहिके कदर होएब जरुरी छैक । हमरा बेर बेर बस एह डर लगैत अछि जे हमरा देल गेल उपनाम 'कविजी'के सदैब सार्थक कऽ पाएब कि नहिसदैब निस्तर कविता लिख पाबिक कि नै ? अपनेसभक मान राखिसकब कि नै ? बस ततबेटा दुगदुगी अछि मोनमे आओर किछु नै । तथापी हमरप्रयास रहत जे जाधरि ठठरीमे प्राण रहत ताधरि मिथिला आ मैथिलीके लेल लडैत रहब ,मरैत रहब आ साहित्यिक रचना करैत रहब । जय हो ....

जय मिथिला !!
जय मैथिली !!
पुनश्च : हमरा विन्देश्वर ठाकुर स विन्देश्वर ठाकुर 'कविजी' बनौनिहार सबगोटेके हमर साधुवाद !आ साहित्यिक अभिवादन !

विन्देश्वर ठाकुर 'कविजी'

विन्देश्वर ठाकुर

ककरो घर कन्नारोहट ककरो घरमे दलिभात [कथा/होली प्रसङ्ग]

है है तो सब होरी होरी बन्द करबे कि नै ? खूब झझैक क फुलगेनमा कहलकै छौडासबके ।
छौडासब त चहटिए लेलकै हे भगला कि नै भगला एत सँ ! इह कहलक जे आइयोके दिनमे कहाँदन होरी होरी बन्द करैछै । है सबदिन कहु होइछि इहो सब ? सब दिन अबैय पावनि तिहार ?सब दिन होइछि रङ्गके बर्षात् ? तखन तो केना बजला हौ जे छोडि दही ई सब ? नै नै हम तोरा कहनेलियो ग' जे चल भैया तोहर जरुरी छि एहि महोत्सबमे । तोरा बिनु हमरा सभक कार्यक्रम सुना अछि ? तखन तो किय एहन अनुने बोली बजला से कह त ? छुडासब त एके सासमे होलियादेलकै फुलगेनमा के । मुदा ई पुछबे नै कैलकै जे कि भेलो? एना किय बजैत छा तु ? पुछबो कोना करैतै ?सबके त भाङ्ग आ दारुके नसा चढल रहैक । अपना होसमे थोडबे रहैक कोई । से ओकर मोनक बात बुझबाक चेस्टा करितैक । मुदा तैयो फुलगेनमा थेथरिक ओअकरासब ल' ठारे रहलै । शायद एहिमेसँ कियो हमर बात बुझत कि ओहि आसमे । कनी देर बाद मनिष पुछलकै - फुलगेन भाई किछु बिशेष कि ? कोनो घट्ना - तट्ना त नहि भ गेलैय यौ ?
अते पुछिते फुलगेनमाके आँखिस श्रवन नोर बहS लगलै । कनिते कनिते बस अतबे कहलकै जे कि कहु भाई । आइ अनर्थ भ गेलैक । हे राजेश्वर कक्काके बौवा छल ने ? - अभय बाबु । यौ ओहे मारल गेलैक ।

ओह ! है से कोना ? मनिष घोर आश्चर्य ब्यक्त करैत पुछलक ।
कि कहु ओन रीयल गप्प त हाम्रो नहि मालुम भेल एखनिधरि मुदा हमरा जते जानकारी अछि से कहैत छी । मनिष सब छुडासबके सम्हारैत किछु गम्भिरतासँ फुलगेनके बात सुनS लेल आग्रह केलकै । सब कनी शान्ता भेलै ।
फुलगेनमा अभय बाबुके रहस्मय मृत्युके बारेमे कहS के शुरुवात केलकै -
देखी राजेश्वर कक्का एहि गामक नीक आ सहयोगी लोक छै से त सबगोटेके पता छौ? हुनकS एकेटा बेटा अभय बाबु जे शहरेमे पढैत छै । पावनि तिहारमे मात्रे घर अबैत छै । सेहो गप्प त सबगोटे जैनते छे । हे देखी ओ त् परसुवे बिरगन्जसँ आएले छलै । काल्हि सबगोटे साथे सम्मन जराबS लेल सेहो गेल रहौ । आइ सेहो कहलनि जे संगे होरी खेलब । मुदा एखन जे गेलौ ओकरा घर बजाबS लेल । बाप रे बा !सडकपर त लोक कर्मान लागल छलै । सबगोटे बफाडि टोडिरहल देखलियै । ओकर मायके हालति त नै पुछ कनैत कनैत बाटह भ गेल छैक । कहाँदन भोरे गेल छलै मुसहरटोलीमे आ ओतसँ एलैयत दारु सेहो पिने छलै कहाँदन । तकरा बाद कनी देर घरए बैसलैय आ तुरन्ते फेर बाहर निकल लेल सुर सार केलकैय । पौडेसरबाली ककिकिलोल कैरते रहिगेलैय भात खाएबाक लेल मुदा ओ कहलकैय जे माँ हम अबैत छी तुरन्ते एकटा मित्रसँ मिलने चौक दिससँ । ओ गेलाह । दारु त पिनहि छलै । दोसरमे मोटरसाकिलसँस्पीडमे गेलैय । साथी सङ्गीसभ संगे आरो बेसी दारु पिलकैय । तकराबाद घर अबैत छलै से रस्तेमे बस ठक्कर मारि देलकैय । इहे ठक्कर बुझS जे अभय बाबुके जीवन ल गेलैक । आब हम कियान गेलियै जे ओ दुश्मनीसँ मारलकैय कि नशा खाक अभय बाबुके गाडीए नै सम्हरलै ? गल्ती खायर जेकर होइक मुदा ई शुभ नहि भेलै ।

फुलगेनमाके बात सुनिते सब छौडासबके भक टुटि गेलै । होरी हेराए रहिगेलै । सबगोटे ससरलै अभय बाबु के घर दिस करण जे फर्की काटऽ के छै,कफन किनऽ के छै आ सामाजिक परम्परा अनुसार अभय बाबुके दाह-संस्कार करऽ के छैक ।

ओह ! हाय रे बिधाता ! केहन छौ तोहर लीला !सबके घर सप्तरङ्गीके रङ्गमे रङ्गल छै आ एकर रङ्गल घर उसरी डीह भऽ गेलै । एकरे कहैछै जे "ककरो घर कन्नारोहट आ ककरो घरमे दालिभात "

विन्देश्वर ठाकुर
धनुषा /नेपाल
हाल : कतार

विन्देश्वर ठाकुर

हमसब बिदेशमे खेलैछी होली
सारि सरहोजि अछिए नै रङ्गब कि चोली
बोलु हैया हैया ह सरररर ....
सरेरर ....
जोगिरा सररर .....

भौजियो जे रहित त मज्जा लुटैतौ
मज्जा लुटैतौ हे मज्जा लुटैतौ
अपन पिचकारी स लहङ्गा भिजैतौ
लहङ्गा भिजैतौ लहङ्गा भिजैतौ
कैरतौ अबीर सङ्गे मनमौजी हो
बोलु सररर ....
जोगिरा सररर ....

सपनामे देखलौ आइ कनियाके चेहरा
कनियाके चेहरा ह कनियाके चेहरा
चारुदिसन स छल देबाराके पहरा
देबाराके पहरा ह देबाराके पहरा
छलै रङ्गस भिजल हमर कनिया मौगी हो
बोलु सररर ....

जोगिरा सररर ....

सोचलौ मोबाइलेप खेल ली होरी
खेल ली होरी खेल ली होरी

कनिया के सुनी मिठगर बोली
मिठगर बोली ह मीठगर बोली
जखने फेकलैयै मोबाइल स ङ्ग
फोने नै गेलै हम भऽ गेलौ तङ्ग
बोलु सररर ....
जोगिरा सररर ....

विन्देश्वर ठाकुर

ईश्वरकए कृपा अपरम्पार [आजुक सत्य घट्ना]

आइ फाल्गुन महिनाके चतुर्दशी तिथी । माने चारुदिस बस होरीए होरीके शुभकामना संदेश आ एहि सम्बन्धी गीत,गजल,जोगिरासब फेसबूकके भित्तामे पसरल । प्रात : काल त ड्युटी चलि गेलौ मुदा जखने ड्युटी स आबि फेसबूक खोललौ त देखऽ मे आएल । बस ओहे होरिए सम्बन्धी बेसी गप्प सप्प । हमहु किछु किछु लिखलौ । किछु किछु पढलौ । बुझु जे अहिनामे थोडे समय बित गेल । आ खाना खाएलाक बाद सुति रहलौ । मुदा एखन तुरन्त जे सुति उठि फेसबूक पर नजरि पडल त बुझु जे होस उडिगेल । बाप रे बा ! ई त सबेरे के खबरि छै । जे काठमाण्डौं मे प्लेन दुर्घट्ना भऽ गेलैय । हमरा भित्री मोनसँ जिज्ञासा उठल - जा कोना भऽ गेलै ? के सब छलै प्लेनमे ? किछु अनहोनी त नहि भऽ गेलै ? भगवान करौक नहि किछु भेल रहौक ! एहने एहने अन्तर्द्वन्दके साथ हम पुरा समाचार देखलौ । ओना समाचार त नेपाली भाषाके पत्रिकामे छपल छल । तें बेसक ओ नेपालीमे लिखल छलै मुदा हम एकरा अपना हिसाबए मैथिलीमे लिख'रहल छी ।

बात ई छलै जे,आइ भोरेमे स्तानबुल स त्रिभुवन अन्तरास्ट्रिय बिमान स्थल काठमाण्डौं के लेल प्रस्थान कयने विमान काठमाण्डौ एयरपोर्टमे आबिक दुर्घट्ना भऽ
गेल । एहि विमानके अवतरण करबाक समय सुबह ७बाजिक ५५ मिनेट छल । मुदा अवतरण होबके १ मिनेट मात्रे बाँकीं छल । आ विमान अवतरण नहि भ सकल । कारण ई जे प्लेन अवतरण करबाक लेल विमानके अगिला आ पैछला पहिया निकलब जरुरी होइत छैक । मुदा दुर्भाग्य बस एकर दुनु दिस के पहियामे स एकोगो नहि निकल । फलत :विमान अवतरण नहि भेल । तकर बाद चालक होसियारी कयलनि जे प्लेनके पुन : आकाशेदिस ल' गेल । दोबारा फेर कोसिस कयलक । मुदा फेरो असफल रहल । ताधरि यात्रीगणसब सेहो घबरागेल छलाह । तथापि उनकासबके ई कहि बलभरोस देल गेलैक जे मौसम खराबीके कारणे नहि अवतरण भ रहल छैक । तें चिन्ताके कोनो गप नै । सब्किछु ठीक भ जेतै । सबगोटे निश्चिन्त रहु । शायद पाइलट बहुत साहसी आ योद्धा छल । पुन : आकाशमे ल गेलाक बाद तेसर बेर विमान अवतरण करबाक निर्णय लेलक । ताधरि त १ घण्टा बितिगेल छल । तथापी चालक अपन अदम्य साहस तथा बुद्धिमतासँ ७ बाजि ४० मिनेटमे विमान अवतरणके तेसर प्रयास कयलक । एहिबेरमे देखियौ समयक चक्र पैछला चक्का निकलल मुदा अगिला साफे निकलबे नै कयल । आब कि हेतै ?प्लेनमे त सोजे आगि लागि लै । सबगोटे डर स त पानि पानि भ गेल ।

आब प्राण नै बाँचत, सब हतोत्साहित भ गेलै । मुदा कहबी छै ने- जे मार'बला स बचाब'बलाके हाथ कखनो नम्हर होइछै । से देखियौ ओ विमान धावन रोड छोडि झारदिसहुलि गेलै । संयोग देखियौ जे कय दिन स उपत्यकामे पानि पडल छलै,जाँहि कारण स बहुते पानि जम्मा सेहो भेल छलै । एहिस आगि बेसी नै पसरलै आ ने बेसी सलकलै । बस तुरन्ते उद्धार टोली अेलै । दमकल,मोटर आदि इत्यादी लेलकै । पानि मिझौलकै आ सब यात्रीगणके कुशलतापूर्बक उद्धार कयलकै ।

आब कहु जे एहन स्थितीमे कुशलता साथ बचब कि सामन्य बात थिक ? तीन तीन बेर अवतरण असफल भेनाई । कते कोशीसके बाब्जुदो अवतरण भेलाक बादो विमानमे आगि लागि जनाईलेनके तेल सठि जनाइ । ई सब अपनेमे एकटा बहुत बढका चुनौती छलैक ।जबकि एहिमे जम्मा यात्री सङ्ख्या देशी बिदेशी मिला २२४ टा छलै । आ जेहन तरिकास ओ दुर्घट्ना भेल छल । ताँहिस बुझ्जे जान जोगएब मुस्किले नै महामुस्किल छल । मुदा सब भगवानक कृपा छैक । किछु एहिठाँ असम्भव नै छैक । कियकी हुनक लीला अपरम्पार छयनि ।

जय हो ....

विन्देश्वर ठाकुर

फागुन पुर्णिमा - होली [साक्षात्कार]

मिथिलामे बिद्यमान आने आने पाबनि तिहार जकाँ होलीके सेहो अपने आ अलगे महत्व छैक । एहि दिनमे सबगोटे बर्षोके इर्श्या,द्वेश बिसरिक एक दोसरके रङ्ग अबीर लगबैत अछि आ एक दोसरमे खुशी,बधाइ शुभकामना आदानप्रदान करैत अछि ।ओना त एखन ई पर्वराष्ट्र स्तरमे सेहो धुमधाम स मानाओलजाइत अछि मुदा तैयो अपन मिथिलामे एकर किछु बिशेष बुझाइछै ।खास क फागुन पूर्णिमा स एक दिन पहिने अर्थात् चतुर्दशीके राइतमे होलिका दहन आ तकरप्रात भेने होरी उत्सव शुरु होइत अछि । आब प्रशङ्गे प्रशङ्गमे चर्चा कS रहल छी होलिका दहनके बिषयमे । आखिर के छलीह त होलिका आ कियक एहन सुखद अवसरमे होलिकाके आगिमे जराओल जाइत छैक ?बातो त सहिए छै । सबगोटेकेजिज्ञासा सेहो लागल होएत जे एक दिस होरी उत्सब ,खुशीके बर्षात् आ दोसर दिस होलिकाके आगिमे जराएब से किय?

त चलु आब एहि गपके परिछादी । हिन्दूधर्मक उपदेशमूलक ग्रन्थ 'श्रीमदभागवत् गीतामे' उल्लेख कयल गेल अछि जे कंशसभक बलशाली राजा छलाह-हृन्यकस्यपु । ओ दूराचारी आ ब्यभिचारी छल । अपन शक्तिके मदमे चुर भेलाक कारणे कोनो देवी देवता ,अथबा भगवानके नहि मानैत छल । अहङ्मेलिप्त ओ राक्षस राज स्वयं भगवान बुझS लगलाह आ सबगोटेके निर्देशन देल गेलैक जे आइके बाद कोई हरीके भक्ती नहि करे । हम स्वयं भगवान छी ते हमर पूजा अराधना होएबाक चाही । जे एहि निर्णयके खिलाप कोनो ओहि दानवके उपेक्षा करथि अथवा दोसर देवी देवताके बन्दना करथि ओकर जीवन लीला बुझ्जे तखने समाप्त भS गेल । आब त एहि दानवके ब्यभिचार स चारुदिस त्राहि त्राहि मचिगेल । सब जनमानसमेत्रास पसिगेल । दिनानुदिन एहि आतातायीकेक्रुरता ,उदण्डता बढिते गेल । सत्यपर असत्यके अन्धकार छागेल ।मुदा जे सृष्टिकर्ता छयनि, हुनकS महिमा त अपरम्पार छयनि । ओ त सर्वेश्वर अन्तर्यामी छयनि ।हुनका आगु ककर जोर चललैय? ओ त सत्य स्थापित करबाक हेतु कोनो ने कोनो माध्यम त जरुर बनालैत छथिन । से वेह भेल । एहनक्रुर राक्षसके घर भक्त

पहलाद सन सत्यबादी आ आदर्शबादी बेटाक जनम भेल । ओ भगवान बिष्णुके अनन्य भक्त रहथि । सदिखनि भक्तिभावमे लीन रहय । पहलादके एहन सत्यवादी स्वभाव आ भगवानप्रतिके श्रद्धा देखिक हिरन्कश्यपुके बड जलन भेल । ओकरा लाख तरहे समझैलकै ,बुझेलकै,डेरैलकै,धमकौलकै मुदा तैयो पहलाद सत्यके पथ नहि छोडलनि आ सदिखनि भगवान बिष्णुके अराधना करैते रहलाह । अपन झुठि शान ,क्षुद्र ब्यबहार तथा भगवान बनबाक भ्रम ओकरा अते बेसी चढिगेल रहैक जे ओ पहलादके जान मार पर तुलिगेल । एहन घोर अपराधिक कार्यमे हुनक बहिन होलिका सेहो अति बेसी सकृय भूमिका निर्बाह कयलीह । होलिकाके कहब रहैक जे पहलाद राक्षस कुलमे जन्म लेलाक बाद जे हरिके भजन आ भक्ती करैय से राक्षस कुलके लेल मार्यादाहीन तथा नीच काम भेल । ताहिपरस अहाके उपेक्षा कS रहल अछि ते ओकरा हम लS कS आगिमे बसि जाइत छी । हमरा ब्रम्हा जी द्वारा आगिमे नहि जरबाक बारादानप्राप्त अछि । मुदा ओ त जरिक भष्म भS जएताह । इहे षड्यन्त्र अनुरुप ओ पहलादके ल' धधकैत आगिमे बसि गेलीह । मुदा ओहि पापिनीके ई पते नै रहै जे बरदान ओकरा अपनास्वयं लेल भेटल छलैक नहि की ओकरा साथमे दोसरो आदमी रहतै तहु अवस्थामे अमर रहबाक । तें काम पुरा बिपरीत भेल । भगवानक अनन्य भक्त पहलाद अपन तपस्या आ भगवानक कृपा स बचिगेल । मुदा अधर्मी ,अत्याचारी होलिका ओही आगिमे जरिक भष्म भS गेलीह । ओहिदिन स एखन्धरि अन्याय, अत्याचार ,पाप आदिके स्वरुपिनी होलिकाके जरएबाक परम्परा रहल अछि । आ एह पापके नाश तथा धर्मके जीत हेतु बिजय उत्सव स्वरुप होली मनाओल गेलैक ।

आब समष्टिगत रुपमे कही त चाहे ओ त्रेता युगमे श्री रामचन्द्र जी पापात्मा राबण उपर बिजय करबाक बात होए । चाहे द्वापरमे कंश उपर श्रीकृष्ण के बिजय पताका अथबा कौरबसन अधर्मीसबके पाण्डबद्वारा कयल गेल पराजित । मुदा सब समयमे असत्य उपर सत्यके बिजय भेला उपरान्त बिजय उत्सवके रुपमे धुमधाम स होली मनबैत आबिरहल छैक । आ इहे परम्परा अनुरुप हमसब एखन धरि ई होली पर्व प्रतेक बर्ष फागुन पुर्णिमाके दिन मनबैत छी ।

एहन शुभ ,सफल आ नीक पाबनिके एखनुक आधुनिक समाज कही वा उपभोक्ताबादी संस्कृति एकदम नै निक जकाँ धाराशाही कS रहल अछि । फगुवाके दिनमे आवश्यकतासँ बेसी पेय पदार्थ पिबिS अनावश्यक झगडा - झन्झट करब ,पुरनका दुश्मनी साधब ,रङ्गके बहन्ने स्त्रीगणके इज्जतसाथ खेलबाडी करब वा कही जे सम्बेदनशील अङ्गके स्पर्श कS अनैतिकता फैलाएब । मजाकके नामपर देहमे वा अङ्गन घरमे गोबर गन्दा,दिसा - पिसाब फेकब आदी,इत्यादी तत्वसब एहि पावनिके धुमिल कS रहल अछि तें एहन अनैतिक आ अमर्यादित कृयाकलापसब स शतर्क भS साबधानीसाथ भाईचराके नातासँगस्नेहभरल रङ्गमे सफल आ सभ्य होली खेली से शुभकामना अछि ।

** विन्देश्वर ठाकुर **

अशरफ राईन

(कबिता)

बसन्त बहार

मौसम बसन्ती
सिहैक - सिहैक
चलै पवन पूर्बैया
जखन -
सिहरै देह
लगाबै तन मे आगि

जागल बिहुसल मन
चल्ल पछिया बातास
टकराएल हिया स
जखन -
सेराएल मनमे आहा प्रती
उठल प्रीतक लहर जागि

आएल मधुमास
मजरल सगरो
महुवा - आम
असार महिना
झरझर बर्खा बर्खै
जखन -
जाक बनिया खेत
मिल सब रोपनिया
मस्त मगन भक
धान रोपि
एके स्वर मे गीत गाबि

तखने -
कुहकल कोईली बिचे
सुनाबै सुमधुर स्वर
करैए बर्णन अपना शब्द स
आ
याद दिलाबैए
मौसम बसन्त बहार
फेर कहिया लौट आबि

अशरफ राईन
सिनुरजोडा
हाल :कतार

अशरफ राईन

(कबिता)
देशक अवस्था

देश अपन बनल कङ्गाल छै
जनता एत सब बेहाल छै
तबो नेतागन सब खुश हाल छै
तहित महान बनल नेपाल छै

सगरो पसरल कुकर्म अधर्मी
बढल कोना कोना अत्याचार छै
के देखत के सुलझाएत समस्या
सभक जीवन अपनेला पहार छै

हत्याहिन्सा अपहरण सोसन
बनल पेशा हुनकर लूट छै
नैए अछि नेम नै अछि कानुन
अपराधी लेल सब छुट छै

लुटाएत देश लुटैत अछि लुटेरा
समाज बनल अन्धाकार छै
बनि बौक बताह चुप्पी सध्रे
गमौने अपन सब अधिकार छै

अशरफ राईन
सिनुरजोडा
हाल :कतार

अशरफ राईन

(कबिता)
तोहर जबाब नैए

कि सोनाचानी कि हिरामोति
फिका छैए सब तोरा आगु
देखक हिलस्गर रुप तोहर
किछ नैए फुराई हम कि बाजु

लगाबै छहि सबके मनमे आगि
अङ-अङ मे जेना अङगार भरल
पाबि तोरा भागयमानी बुझत
सबके नेह मे छहि तुहि गरल

आखित कटारी तोहर तीर चलाबौ
घायल भेल तोरा नैनक बान स
इश्वर छोडि बनल तोहर पुजारी
बसौने तनमन मे चाहौ दिल जान स

गामे-गामे तोरे सुन्दरताक चर्चा छौ
देखक कोइ पागल हौ,कोइ मरी छै
कहै सब कि हिरोनी,कि रुसियन
आएल चलि क स्वर्गक जेना परी छै ।।

अशरफ राईन
सिनुरजोडा,धनुषा
(नेपाल) हाल :कतार

अब्दुर रज्जाक

मुन्नाजीक विहनि कथा

मैथिली साहित्याके एकटा बहुत निक बिहिन कथा संग्रह आइजकाइल समय के दोगाठी मे जोगा मोगा क परहू मे लाइगपरल छिक। कथा क संग्कलित कर्ता अछी मुन्ना जी। इ प्रतिक खिस्सा बिहिन खिस्सा सब स भरल अछी जम्मा जम्मी ७३ टा खिस्सा अपने आप मे कोनो केक्रो स कम नै लागल मुदा बिहिनखिस्सा मे बहुत तरहक भाव सौणा बौक्ट्रा जाइ अछी। मिथिला समाज क पहीन स रहल बिकृति आ विसंगती के, दबोचल महिलाक अवस्था के , समाज क घोच पेच के , घोघ के भित्र मे दबाउल यौन किर्याके , मसोरल प्रेम के , गुह्रे लोत पोत राजनैतिक के आरो येहन बहुत सन् बियाकुल जनजीबन के, खिस्सा कार सब कोनो ठाम चौल मजाक स त् कोनो ठाम दोहाठ्थी लाठी स पिथियौट्टा तोरने अछी।

बिहिन कथा खास क खिस्सा क मूल संदेश क आत्मा प् प्रभाव पूर्ण जोर देब मे कम्जोर भजाई अछी। किछ मे त् संदेश क मर्म से हो बदैल जाइ अछी तै स बहुत होसियारी पुर्बक लेख्बाक चाहि जे अहु बिहिन कथा संग्रह मे भेल अछी। किछ खिस्सा क त् साधारण ढंग स बुझ्बाक जटिल होइ अछी बिहिन कथा मे से हो अछी भेल। ' प्रतिक क' खिस्सा सब किछ अपन मूल संदेश के ओज पूर्णस प्रस्सुत नै कर सक्के अछी जे बिहिन कथा के कमजोरी कह परत. मुदा कोनो कोनो कथा छोट मे सटिक मन के छु जाइ बला लागत खिस्सा क थिम सास्त्र स जोरल आ संदेश मुलक बनाव क लेल पूर्णजानकारी आवश्येक अछी
जेना 'देह,मन आ प्रेम' एकटा खिस्सा अछी येकर संदेश अछी महिला क जिबन खाश क ओकर संसारिक जिबन आ मिर्त क बादो के जिबन क भए त्राश मे ओकरा सम्झाउल जाइ अछी मुदा ओकरा धर्मक मूल बात सहि बात स कतेको जगह बन्चित राख्ल जाइ अछी। ई खिशा मे महिला पात्र अछी सबिना आ पुरुष पात्र मोहसिन। सविनाक अब्बा जान मोल्बी साहेब छैथ। मोह्सिन एकटा पिय्कर पत्तित पति अछी सबिना क मुदा ओकरा मन के दुखि क क से हो ओकरा संग रह्बाक दबाब अछि जे किन्नौ सह योग्य बात नै अछी ओकरा लेल। की पत्तित पति के खुश रख्बाक चाहि वा जे बेदीन(गैर धर्म) प् चलैत रहै छैथ तिनको दुवा स जन्नत जेबाक राष्ता खुलै अछी की ? इस्लाम मे बेदीन लोग के किछ सम्यक सम्झाब्क मौका अछी मुदा ओक्रे संग नरक राष्ता नै अख्तियार कर्बाक चाही। सबिना अपना खाब्दि के रोक्बाक हर प्रयाश करै छैथ मुदा सोकाज नै अबैया पाथैर बैन क चुपचाप माएर खा खा जीवित अछि। इस्लाम महिला मात्र एक चाट मार्बक ओहो अन्त मे बात निक नै मानै तब मुदा हरदिन नै अगर केक्रो बराबर यातना दै अछि त् तलाक राष्ता अछी जे महिला लोकैन के बहुत कम के जानकारी अछि , कथा मे अस्पस्ट अछी इ बात।

दोसर एकटा खिस्स अछी जाइमे मिया टोलि मे कन्डम बट्बा क आदेश एकटा नेता पन्न देने अछी
गरिबी के अपहेलना सग्रो दुनिया मे अछी मुदा खाश क मिथिला समाज मे त् बेनागैन क क बाबु भैया छोरै अछि गरिबी के। समाज क बहुत बात हु बहु अछी जे कथा सब मे देखाई अछि। अन्त मे निक अछी प्रतिक।

अब्दुर रज्जाक

गजल

रीत प्रेमक अछी संग फिदा भगेलौ
हम देखैत देखैत अन्तः बिदा भगेलौ

प्रीत उनके संग छल हम बिदा भगेलौ
रूप निहारैत देखैछी संग बिदा भगेलौ

किछ कहबाक छल कंठ मेंदबा क गेलौ
स्वर कोकिल सन छल बिदा भगेलौ

दिल उनके संग छल हममिलाक गेलौ
फूल महक स सम्मोहित हम बिदा भगेलौ

अब्दुर रज्जाक (धनुसा हरिपुर) हाल कतार

ऐ रचनापर अपन मंतव्य ggajendra@videha.com पर पठाउ।

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

(c)२००४-१५. सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतऽ लेखकक नाम नै अछि ततऽ संपादकाधीन। विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: राम विलास साहु, नन्द विलास राय, सन्दीप कुमार साफी आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण)। कला-सम्पादन: ज्योति झा चौधरी। सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र- बेचन ठाकुर। सम्पादक- सूचना-सम्पर्क-समाद- पूनम मंडल। सम्पादक- अनुवाद विभाग-विनीत उत्पल।

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) ggajendra@videha.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/ संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक/ प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार ऐ ई-पत्रिकाकेँ छै। ऐ ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

(c) 2004-15 सर्वाधिकार सुरक्षित। विदेहमे प्रकाशित सभटा रचना आ आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। रचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशन किंवा आर्काइवक उपयोगक अधिकार किनबाक हेतु ggajendra@videha.co.in पर संपर्क करू। ऐ साइटकेँ प्रीति झा ठाकुर, मधूलिका चौधरी आ रश्मि प्रिया द्वारा डिजाइन कएल गेल।५ जुलाई २००४ केँ http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

 

सिद्धिरस्तु